अंतरा-शब्दशक्ति

सूक्ष्म गहनानुभूति

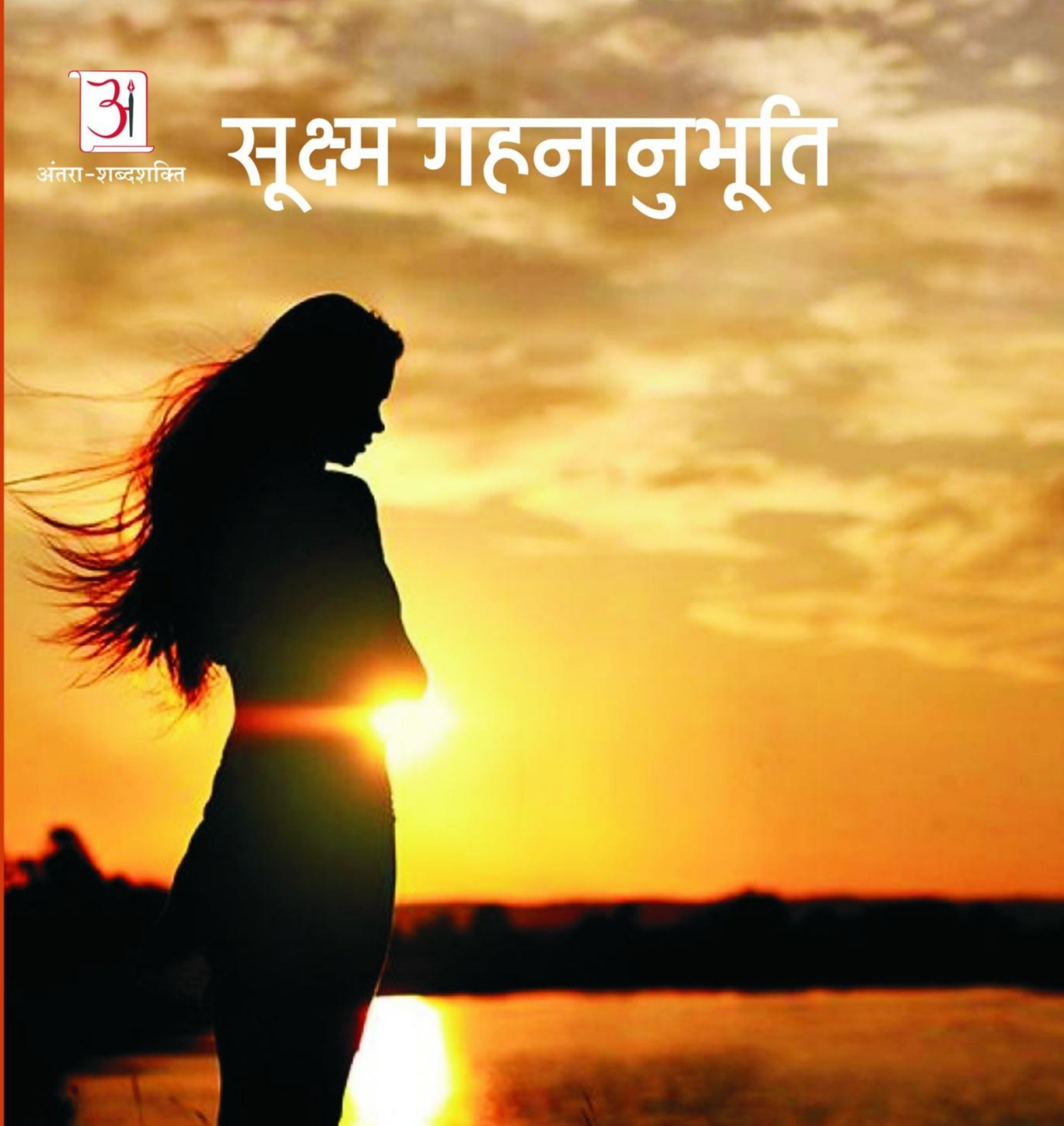

लघुकथा संग्रह

डॉ चेतना उपाध्याय

सूक्ष्म गहनानुभूति

(लघुकथा संग्रह)

चेतना उपाध्याय

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-49-0

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © चेतना उपाध्याय

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Sukshm Gahananubhuti' by 'Chetna Upadhyay'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

साथियों नमस्कार,

यह लघुकथा संग्रह आपको सौंपते हुए बडी प्रसन्नता हो रही हैं। क्योंकि मै जब भी सामाजिक विद्रूपताओं से दो चार होती हूं। उगलते बनता है ना निगलते ।पता ही नहीं चलता कब वे शब्द सीधे सपाट स्वरूप में कागज पर ऊभर आते हैं । कुछ ऐसी ही अनुभूतियों को लघुकथा के रूप में आपके समक्ष रख रही हूं ।उम्मीद है नन्हा संग्रह अवश्य पसंद आएगा । प्रेरक प्रीति सुराना जी का हार्दिक आभार जिनके अथक प्रयासों का परिणाम है यह सूक्ष्म गहनानूभूति.....।

शेष फिर कभी

आपकी अपनी

डा चेतना उपाध्याय 9828186706

अजमेर राजस्थान

अनुक्रमणिका

1. किशोरवय नज़र	5
2. काम का दबाव	6
3. मौत के बादल	7
4. फोकट की शिक्षा	7
5. सांईन्स/अंग्रेजी	8
6. हाथ की भूमिका	9
7. मैं क्यों सुनूंगी	10
8. सुखद दोस्ती	11
9. प्रशासनिक पद	12
10.स्पष्ट मनोवृत्ति	13
11.भीख बनाम सहायता	14
12.पृथक आकांक्षाएँ	15
13.दूर दृष्टि	16

किशोरवय नज़र

रश्मी ने मनाली से लौटते समय ही मम्मी से वादा करवा लिया कि अब वो स्पोर्टस क्लब जाइन करेगी ही। दसवीं बोर्ड के चक्कर में इस साल वो नहीं जा पाई थी। खैर मम्मी ने भी हां कर दी थी।

रश्मी घर आते ही तुरंत एक्टिवा उठाकर जाने लगी तो मम्मी ने टोका बेटा अभी नहीं कल चलेगे। घर में बहुत सारा काम बिखरा हुआ है।

नहीं, नहीं ये काम मुझसे न होगा।

अच्छा ठीक है। यह काम आज में निपटा दूंगी कल मैं फ्री हो जाऊँगी तो अपन साथ चलेगे।

आप क्यों चलोगी?

अरे बेटा मैं भी कालेज टाईम में स्टेट चेम्पियन रहीं हूं।

तो क्या हुआ? अब तो हमारे जाने के दिन हैं आपके नहीं, वहां बच्चे जाते हैं बूढ़े नहीं..... कहते हुए उसकी एक्टिवा सरपट दौड़ गई।

मम्मी ने हिसाब लगाया। जब ये जन्मी थी तब मैं इक्कीस की थी आज यह पन्द्रह की है तो मेरी उम्र हुई 36। अपनी जन्म दिनांक से जोडूं तब भी मैं अभी 36 वर्ष की ही हूं। पर इस उम्र को बूढ़ा तो नहीं कहा जा सकता.... शीशे में चेहरा देखा तो वहां भी बुढ़ापा नजर नहीं आया पर किशोरवय बेटी की नजर ने तो बूढ़ा कह आगे अपना रास्ता नाप ही लिया......।

काम का दबाव

सक्सेना साहब ने ललीता जी को कहा यह नवीन प्रोजेक्ट अब आपको करना है। इस फाईल पर कृपया हस्ताक्षर कर दीजिए।
नहीं नहीं सर मेरे लिए तो यह संभव ही नहीं है। मेरी सासूजी बहुत बीमार है उनका आपरेशन करवाना है मुझे।

ओह! चलिए कोई बात नहीं मैं यह आशा जी को सौंप देता हूं।

दो माह बाद साहब ने ललीता जी को एक प्रशिक्षण कार्य सौंपा।

अरे साहब आप तो जानते ही हैं। मेरी सासूजी की हालत बहुत खस्ता है। कमजोरी इतनी है कि पिछले साल भी आपरेशन नहीं हो पाया था। ऐसे में कैसे कार्य कर पाऊँगी इसमें तो समय काफी लगता है।

अच्छा ठीक है अशोक जी से कह देता हूं। सक्सेना जी द्रवित हो गए थे फिर दूसरे दिन वे साहिल वृद्धाश्रम गए अपनी दिवंगत माँ की पुण्यतिथि पर बुज़ुर्गों को भोजन करवाकर माँ को श्रृद्धांजली अर्पित करने हेतु।

वहाँ एक वृद्धा हाथ जोड़कर बोली बेटा जुग जुग जिओ, खाना बहुत स्वादिष्ट था और आप भी बहुत सेवाभावी हो। पर एक बात बताओ आप अपने कर्मचारियों को इतना दबाव में क्यों रखते हो? क्या उनके जीव नहीं है। मेरी बहू ललिता आपके यहां काम करती है, बेचारी आपके कामों के बोझ से अधमरी सी रहती है। पांच साल हो गए बेचारी चाह कर भी मुझसे मिलने तक नहीं आ पाती वृद्धाश्रम। मैं अपने पोते का मुंह देखने तक को तरस जाती हूँ ..।

मौत के बादल

रामगोपाल जी ने अपने बड़े बेटे के अंतिम संस्कार से निवृत्त होते ही कहा बेटा श्याम, तेरा भाई तो मुझे छोड़ विदा हो लिया। अब तू मेहरबानी करके यह शराब तम्बाकू छोड़ दें।

श्याम ने तमतमाते हुए कहा जो गया, वो तो गया, जो जिन्दा है वो भी अपना जीवन ना जिए। क्या चाहते हो?

बेटा मैं तो तेरा जीवन चाहता हूं। तू राजी खुशी सौ साल जिए।

तो फिर यह टोका टोकी क्यों शराब, तम्बाकू, मेरे शौक हैं मेरा जीवन है, मर-मर के क्या जीना.....? मौत का क्या है उसे जब आना होगा आएगी। क्या आप मुझे गारण्टी देते हो। शराब तम्बाकू छोड़ देने मात्र से, एक्सीडेन्ट, हार्ट अटैक, हार्टफेल, अस्थमा, किसी अन्य से भी मेरी मौत कभी ना होगी, बोलो, लिखकर दे सकते हो? यदि दे सकते हो तो ठीक है, वर्ना मुझे आगेसे टोका-टोकी मत करना। खुद जिओ और मुझे भी जीने दो।

फोकट की शिक्षा

अल्लाह के नाम पर दे दे बाबा...

राकेश ने उसे ऊपर से नीचे तक घूर के देखा और बोला हट्टा कट्टा शरीर है कुछ काम धाम क्यों नहीं करते? सरकार ने कितनी सारी योजनायें चला रखी हैं तुम्हें लाभान्वित करने के लिए। वो टेकरी पर जाओ वहां नरेगा का काम चल रहा है। मेहनत करो थोड़ा, पैसा अपने आप मिलेगा....

भिखारी बोला, साऽऽऽला मास्टर... दमड़ी तो निकलती नहीं जेब से। फोकट की शिक्षा झाड़ता रहता है जब देखो तब...।

सांईन्स/अंग्रेजी

रेखा ने राजेश को तंज कसा। तुमसे कुछ नहीं होता अपने बच्चों की जिम्मेदारी भी नहीं उठा सकते, मेरी तो क्या खाक उठाओगे?

राकेश के तन बदन में आग लग गई। वो बोला तू अपने आप को शहंशाह मत समझ बच्चों को तो मैं दो मिनट में लाईन पर ला दूंगा फिर वो बाहर-चबूतरे पर दीवार का सहारा ले आराम से पैर फैलाकर बैठ गया। इतने में ही रानू उछलता कूदता घर में आया।

कहाँ से आ रहा है, नवाबजादे....

पापा आज साईन्स का पेपर था। स्कूल से आ रहा हूं।

अच्छा! अच्छा! चल दिखा तेरा पेपर ... पेपर हाथ मे आते ही राकेश ने उसे उलटा पलटा और एक जोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया ....

क्या हुआ पापा ..?

रानू तिलमिला कर बोला मुझे पागल बनाता है। कहता है साइन्स का पेपर है। इसमें तो पूरा का पूरा अंग्रेजी है गुस्से में चीखता हुआ राकेश बोला।

आवाज सुन कर रेखा भी बाहर आई पेपर देखते ही माजरा समझ गई और बोली जनाब साइन्स का ही पेपर है। अंग्रेजी तो माध्यम है। आपका बेटा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में पढ़ता है।

हाथ की भूमिका

रजनी अपनी सात वर्षीय बिटिया को उसके विद्‍यालय द्‍वारा दिए गए गृहकार्य को करवाने में जुटी थी। बिटिया रानी को नींद आ रही थी इसलिए वो भी झल्ला रही थी। मगर रजनी भी क्या करें घर का सारा कार्य निपटाने के बाद रात को ही उसे समय मिलता है जब वह बेटी की पढ़ाई पर ध्यान दे पाती है। जैसे तैसे मनाते हुए बिटिया को पढ़ाई का महत्व समझाते हुए उसने बेटी का हाथ पकड़कर उसे कलम थमा दी और स्वयं बच्ची का हाथ थामे लिखवाने लगी...

थोडी देर में ही बेटी बोली मम्मी एक बात मेरी भी सुन लो। आप ऐसा करो कि मेरा हाथ काट लो, फिर उसे पकड़कर जितना मरजी हो लिखवा लेना। मैं सो जाती हूं। सुबह उठकर डाक्टर अंकल से अपना हाथ वापस जुड़वा लूंगी।

रजनी एकाएक अचकचा कर रह गई।

मैं क्यों सुनूंगी

मम्मा ये संजय है मेरे साथ ही बी.ए. में है। हम शादी करना चाहते हैं- निर्लज्जता से आकांक्षा बोली।

अभी तो पढ़ रहे हो बेटा। पढ़ाई पूरी कर लो शादी विवाह के बारे में बाद में सोचना।

नहीं-नहीं पढ़ाई तो चलती रहेगी। हम एक दूसरे के बगैर एक पल भी नहीं रह सकते है।

क्यों संजय? संजय ने स्वीकारोक्ति में सर हिलाते हुए कहा, हां आंटी हमें तो आज ही शादी करना है। आकांक्षा ने कल अपना अठारहवां बर्थडे मनाया है। कानूनी अड़चन होगी नहीं।

संजय बेटा देखो, शादी ब्याह के निर्णय यों अचानक नहीं लिये जा सकते। अभी आप अपने घर जाओ मैं आपसे कल शाम को बात करती हूं अभी आकांक्षा से कुछ देर अकेले में बात करना चाहूंगी।

संजय के जाते ही वे आकांक्षा की ओर मुखातिब हो बोली देख बेटा संजय अभी बेरोजगार है। मैं तुम्हें सुरक्षित समृद्ध जीवन देना चाहती हूँ। समझदारी से काम लो। मैंने तुम्हारे भविष्य की खातिर अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया। सभी परिजनों ने दूसरी शादी पर जोर दिया था पर मैंने किसी की न सुनी। सारा जीवन एकाकी रहकर तुम्हारी परवरिश की।

जब आपने किसी की नहीं सुनी तो मैं क्यों सुनूंगी किसी की....?

सुखद दोस्ती

रानू और राकेश ने मंच पर व नुक्कड़ नाटकों में एक साथ काम किया था। दोनों ही मंच के सशक्त कलाकारों में से थे। पर क्या करें मंच आत्म संतुष्टि तो देता है। पर दो वक्त की रोटी उससे नसीब नहीं हो पाती। यही कारण था कि वे रोजी रोटी के जुगाड़ में स्वतः ही मंच से दूर पृथक पृथक दिशाओं में पहुंच गए।

पच्चीस वर्ष पश्चात कला महोत्सव में एक नाटक की समाप्ति पर दर्शक दीर्घा में अचानक मुलाकात हुई। राकेश की पत्नी पानी पताशे वाली स्टाल पर पहुंच चुकी थी और रानू के पतिदेव पान की दुकान पर।
यहाँ दोनों की ही बांछे खिल गई एक दूसरे को देखकर दोनों ही आगे बढ़े थे मगर संस्कारों का दायरा दीवार बन बीच में आ गया। गले लगने को बढ़े हाथ अभिवादन की मुद्रा में जुड़ गए थोड़ी औपचारिक बात हुई फोन नम्बर आदान प्रदान की इच्छा जगी, मगर रानू फोन हाथ में उठाकर भी नम्बर देना टाल गई।

राकेश समझ गया उसने तुरंत अपने फोन की गैलेरी में जाकर एक वाटसअप मेसेज निकाला और कहा देखो कितना अच्छा मैसेज है।
फूलों के प्रति आकर्षण उन्हें शाख से तोड़ लेने को विवश कर देता है मगर फूलों से प्यार पौधों को खाद पानी देने को विवश करता है तोड़ने को नहीं।

राकेश ने पूछा कैसा लगा? रानू ने छलकती आंखों से कहा- हाँ अभी ऐसा लगा कि माली फूल के पास खड़ा होकर कह रहा है कि तुम जी भर के खिलो, चहुं ओर महको। खाद पानी स्नेहयुक्त आकाश मैं दूंगा तुम्हें।

पर चिंता न करो। शाख से कभी पृथक नहीं करूंगा। न ईश्वर पर चढ़ाने को न गुलकंद बनाने को न ही वेलेन्टाईन डे पर पत्नी को रिझाने को। बस तुम यों ही खिलखिलाते महकते गुलाब बने रहो। खूब मंकरद बिखेरो मधुमक्खियों के लिए शहद बनाने को। बस मैं यह अनुभव कर सकूं यह महक मेरी बगिया के गुलाब की है। मेरे दोस्तों की फेहरिस्त में सदैव प्रथम पायदान पर बने रहो।अशेष कुछ भी नहीं।

प्रशासनिक पद

सावित्री देवी को पढ़ाई का बड़ा शौक था। बच्चों के साथ बैठकर अक्सर प्राथमिक कक्षा की पुस्तकें पढ़ती कभी बच्चों के देखा देखी, कुछ कुछ लिख लेती। धीरे-धीरे वे तो समस्त विषयों में माहिर हो गई। आत्मविश्वास भी प्रबल हो गया तो देवर जी की आई.ए.एस. चयन सम्बन्धी पुस्तकें भी उन्होंने घोंट कर पी ली।

इसका अहसास तब हुआ जब देवर जी आइ.ए.एस. की चयन परीक्षा देकर लौटे और अपने उत्तरों का मिलान करने बैठे, तो आधे से भी अधिक प्रश्नों के उत्तर सावित्री जी ने बड़ी ही सहजता से दे डाले.. अरे वाह भाभी, थोड़ी सी मेहनत और हो जाए तो आप तो आई.ए.एस. बन जाओगी।

हाँ!हाँ!अब मैं भी अगली बार फार्म भर दूंगी।

बीच में ही बड़े भैय्या बोले बगैर अकादमिक डिग्री आप आई.ए.एस. नहीं बन सकती और यह आपके लिए "दूर की कौड़ी" समान है क्योंकि आपके पास स्नातक स्तर की कोई औपचारिक डिग्री नहीं है।

जी नहीं भाई साहिब हमारी भाभी जी तो प्रशासनिक अधिकारी बन कर ही रहेंगी। मैने पता कर लिया है कि कुछ मुक्त शिक्षा प्रणाली के विश्व विद्यालय है जो दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से न्यूनतम आयु सीमा 21 वर्ष को 31 जुलाई तक सीधे ही एम.ए. की डिग्री प्राप्ति हेतु प्रवेश दे देते हैं। अपने लिए मदुरै कामराज विश्वविद्यालय में आवेदन करना आसान रहेगा। इसके लिए एक औपचारिक प्रवेश परीक्षा देनी होती है। मैंने वह आवेदन मंगवा लिया है। मुझे पूरा विश्वास है भाभी जी की लगन, मेहनत, जुझारूपन व योग्यता, बौद्धिक क्षमता उन्हें प्रशासनिक पद पर अवश्य ही पहुंचा पाएगी।

आई.ए.एस. की तैयारी करने वाले देवर जी को भाभी जी में ही एक आई.एस.एस. अधिकारी की झलक स्पष्ट दिखाई दे गई थी।

स्पष्ट मनोवृत्ति

हमारे प्रशिक्षण स्थल पर बरसों बाद अचानक अशोक पर नजर पड़ गई। कहां वह भोला भाला ऊर्जावान युवा और आज यह परिपक्व व्यावसायिक मनोवृति वाला प्रौढ़। इतना परिवर्तन? इसे तो हमने ही बनाया था। आखिर इसमें बहुत कुछ संभावनायें दिख रही थीं। हमने ही बड़ी शिद्दत से तराशा था इसे। अनुपम अलौकिक हीरे सा निखार भी आ गया था इसमें। तो हमें पूरी उम्मीद थी यह अपने उज्ज्वल प्रकाश से पूरे समाज को जगमगा देगा। मगर आज कुछ उसका पृथक ही रूप नजर आया। चेहरे का तेज कुछ बुझा बुझा सा था। मगर आवाज की बुलंदी आसमां छूती प्रतीत हो रही थी। सिंह की गर्जना भी उसके सामने फीकी सी थी... वह अपने रौबीले अंदाज में किसी से बात कर रहा था।

मुझे देखते ही बोला नमस्कार मैडम...।

नमस्ते जी, कैसे हो? बड़े ही अच्छे समय पर आए हो, हमारे यहां प्रशिक्षण चल रहा है। एक तेजस्वी व्यक्तित्व की प्रभावशाली वार्ता समस्त संभागियों को भी मिल जाएगी आओ अंदर आओ चाय पीते हैं पहले, फिर तुम्हारी व्यक्तित्व विकास पर वार्ता होगी...

जी नहीं मैडम आजकल मुझे मेरी वार्ता के दस हजार रूपये मिलते हैं। यहां फोकट में देनी पडेगी, इसलिए मुझे तो माफ करें आप,..।

भीख बनाम सहायता

लाली ने आज मिलते ही कहा- मैडम अब मैं स्कूल नहीं जाना चाहती।

क्यों बेटा अचानक क्या हो गया?

बस मैडम वहां मुझे अच्छा नहीं लगता। सब कहते कुछ हैं करते कुछ....

ऐसा क्यों बेटा?

पता नहीं मुझे, पर पढ़ना अच्छा लगता है। लेकिन मैडम आशा के पास टाइम नहीं है। लीलावती मैडम तो पूरे टाइम पोषाहार का हिसाब लगाती रहती है। रमेश सर बी.एल.ओ. की डयूटी का जोड़ बाकी करते रहते हैं। और बड़े सर कोई भी आता है तो मुझसे कहते हैं वो सफेद रंग की अक्षय पेटिका लाना और हर एक के सामने रख देते है.. कहते हैं इसमें बच्चों के लिए कुछ डालिए ..कुछ तो डालिए। कुछ ना कुछ तो डालना ही पडेगा। हमारे बच्चों के लिए...।

मैडम आप तो कहते थे भीख मांगना बुरी बात है मैं भी अपने छोटे भाई को गोद में लेकर भीख मांगा करती थी तो आप मुझे डांटते थे, अब स्कूल में भी तो यही...।

पृथक आकांक्षाएँ

अंकित व रोमा ने मुम्बई से इन्दौर आने का रिर्जवेशन करवा लिया था। अंकित तीन दिन अपने माता-पिता के पास रुक जाएगा, रोमा भी वहां से अपने मायके में रह आएगी। यह खबर अंकित ने अपने पापा को दी तो वे खुश होते हुए बोले अरे वाह बेटा, यह तो बड़ी अच्छी खबर है परसों तुम्हारी मम्मी के मोतिया बिन्द का आपरेशन है। तुम्हें देखकर वो खुश भी हो जाएगी, थोड़ी सेवा चाकरी भी उसे मिल जाएगी। मुझे भी थोड़ी सहूलियत हो जाएगी।

पास खड़ी रोमा को भी यह वार्तालाप सुनाई दे गया था। तुरंत ही उसने निर्णायक स्वरों में कहा। रहने दो अंकित अपना रिर्जवेशन कैसिंल करवा दो। अपन तो वहां रिलेक्स मूड में फ्रेश होने जा रहे थे। पर अभी तो तुम भी अस्पताल के चक्कर में फंस जाओगे। मेरा तो भैयया के साथ वाटरपार्क, मूवी, शापिंग का प्लान था, कुछ भी नहीं हो पाएगा। ऐसे में क्या करेंगे। वहां जाकर?

हां! यार पर एक समस्या हो जाएगी दस साल पहले मम्मी ने मुझे बर्थडे पर एक एफ.डी. करवा कर गिफ्ट दी थी। अब वह मेच्यौर हो रही है। अभी गया तो खुद ही बैंक जाकर कैश ले आऊंगा। वर्ना तो बाद में पापा कहेंगे आपरेशन में सारा पैसा खर्च हो गया। फिर तो कुछ हाथ नहीं आने वाला। ऐसा करता हूं एक दिन को अकेले ही हो आता हूं।

दूर दृष्टि

टी.वी. समाचारों में आ रहा था कि अनुपमा जी की अनुशासित, मर्यादित, प्रगतिवादिता व शैक्षणिक दूरदृष्टिता के कारण उन्हें सिंघानिया विश्वविद्यालय का एम.डी. मनोनीत कर दिया गया है। कविता के पापा का मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया आखिर वे उनके समधी होने जा रहे थे।

कविता की मम्मी भी बोली यह तो बहुत अच्छा है। उनका बैंक बैलेंस भी बढ़ जाएगा। अपनी कविता तो जीवन भर ऐश करेगी...

पास बैठी कविता के ऊपर तो जैसे मनों पानी गिर गया। वो चिढ़ते हुए बोली। पापा मुझे तो उस घर में शादी वादी नहीं करनी। शादी के बाद मेरे एन्जायमेंट पर तो वहां पाबंदी लग जाएगी। मुझे बिल्कुल पसंद नहीं ऐसा..... ये भारी भारी शब्दों के तले तो घर में मेरा दम ही घुट जाएगा।

मुझे तो अपनी फ्रीडम चाहिए। ये अनुशासन-वनुशासन से तो मुझे दस फिट दूर ही रहना है। ये भारी भरकम अलंकरणों से सजी एम.डी. सास मुझे तो कतई बरदाश्त नहीं। आप आज ही शादी से इन्कार कर दो। मैं अपने लिए दूसरा स्मार्ट लड़का ढूंढ लूंगी।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. चेतना उपाध्याय

पति - श्री अनील कुमार उपाध्याय

शिक्षा - एम.एस.सी., बी.एड., पी.एच.डी.

कार्यक्षेत्र - वरिष्ठ व्या. (समकक्ष प्रधानाचार्य) जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, मसूदा, अजमेरा (राजस्थान)

प्रकाशन एवं उपलब्धियाँ :-

1. कहानी, कविताएं, आलेख, शोधालेख आदि निरंतर प्रकाशित।
डाक्युमेन्ट्री निर्माण - 1. अक्षरो की फसल 2. दसवी कक्षा पश्चात् विषय चयन पर मार्गदर्शन
एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली द्वारा बाल फिल्म हेतु राष्ट्रीय अवार्ड
अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल जयपुर मे बेस्ट डायरेक्टर अवार्ड
अंतराष्ट्रीय क्राबी महोत्सव थाइलैंड में भारत भास्कर अवार्ड
अंतराष्ट्रीय बाल साहित्य गौरव रत्न प्राप्त
अंतराष्ट्रीय सैंड ड्यून फिल्म फेस्टिवल में फिल्म प्रसारण
अंतराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोधालेख प्रकाशित
बाल कविता संग्रह काव्य सुमन, कहानी संग्रह रिक्त आकाश
एस.आई.ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तकों में लेखन
30 राष्ट्रीय संगोष्ठियों में पत्र वाचन, 25 राष्ट्रीय सम्मान
राज्य स्तरीय संदर्भ व्यक्ति (संस्था प्रधान) लीडरशीप राजस्थान
अंतराष्ट्रीय लायन 3233ई2 रीडिंग एक्शन सभापति।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-49-0

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com